EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

मानवता, शांति, विकास और उन्नति के लिए वसुधैव कुटुंबकम : समकालीन वैश्विक दृष्टिकोण

प्राचार्य (अतिरिक्त कार्यभार) डॉ. संजय शेडमाके
पी.व्ही.डी.टी. कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, मुंबई

मुख्य शब्द : वसुधैव कुटुंबकम, मानवता, जागतिक शांतता, शाश्वत विकास, नैतिक मूल्ये, सहअस्तित्व, भारतीय तत्त्वज्ञान, जागतिक नागरिकत्व

भूमिका (Introduction)

भारतीय दार्शनिक परंपरा ने विश्व को सदैव एक व्यापक, परस्पर जुड़े हुए तंत्र के रूप में देखा है। इसी दृष्टि का सार है — "वसुधैव कुटुंबकम", जिसका अर्थ है समस्त पृथ्वी एक परिवार है। यह विचार महा उपनिषद से उद्भूत है और भारतीय चिंतन की उस मानवीय चेतना को अभिव्यक्त करता है, जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। आज का विश्व अभूतपूर्व वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ-साथ गहरे नैतिक और मानवीय संकटों से भी जूझ रहा है। युद्ध, आतंकवाद, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय क्षरण, जलवायु परिवर्तन और सांस्कृतिक टकराव जैसे मुद्दे मानव सभ्यता के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाएँ अवश्य कम की हैं, किंतु मानवता, करुणा और आपसी विश्वास का अभाव और अधिक स्पष्ट हुआ है। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में वसुधैव कुटुंबकम केवल एक सांस्कृतिक या आध्यात्मिक सूत्र नहीं रह जाता, बल्कि यह मानवता, शांति, विकास और समग्र उन्नति के लिए एक व्यवहारिक और आवश्यक दृष्टिकोण बन जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इसी अवधारणा की समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study)

वर्तमान समय में वसुधैव कुटुंबकम पर अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से और अधिक बढ़ जाती है—

वैश्विक संघर्ष और अस्थिरता :

विश्व के अनेक भागों में युद्ध, आंतरिक संघर्ष और शरणार्थी संकट मानव जीवन की गरिमा को चुनौती दे रहे हैं। शांति स्थापना के लिए केवल राजनीतिक समझौते पर्याप्त नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय दृष्टि आवश्यक है।

मानव मूल्यों का ह्रास :

उपभोक्तावाद और भौतिकवाद के प्रभाव में करुणा, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य कमजोर पड़ रहे हैं।

विकास की असमान धारा :

आर्थिक विकास कुछ वर्गों तक सीमित रह गया है, जबकि बड़ी जनसंख्या वंचित बनी हुई है। यह स्थिति सामाजिक असंतोष को जन्म देती है।

पर्यावरणीय संकट :

प्रकृति के दोहन ने वैश्विक अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। पृथ्वी को परिवार मानने की भावना ही पर्यावरण संरक्षण का आधार बन सकती है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

शिक्षा और नीति-निर्माण में उपयोगिता :

इस दर्शन को शिक्षा, प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अपनाकर दीर्घकालिक समाधान खोजे जा सकते हैं।

मुख्य विषय-वस्तु का विवेचन (Main Theme Explanation)

दार्शनिक आधार

वसुधैव कुटुंबकम भारतीय दर्शन की समन्वयवादी दृष्टि का प्रतीक है। उपनिषद, गीता, बौद्ध और जैन परंपराएँ अहिंसा, करुणा और सह-अस्तित्व पर बल देती हैं। यह विचार व्यक्ति को संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठाकर समष्टि के कल्याण से जोड़ता है।

मानवता के लिए प्रासंगिकता

मानवता का वास्तविक अर्थ केवल अधिकारों की माँग नहीं, बल्कि कर्तव्यों की स्वीकृति भी है। यह अवधारणा भूख, गरीबी, बीमारी और आपदाओं के समय वैश्विक सहयोग को नैतिक आधार प्रदान करती है। कोविड-19 महामारी जैसे अनुभवों ने यह सिद्ध किया कि वैश्विक समस्याओं का समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

वैश्विक शांति की अवधारणा

शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि न्याय, समानता और सम्मान पर आधारित सामाजिक व्यवस्था है। वसुधैव कुटुंबकम शत्रुता के स्थान पर संवाद, प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग और हिंसा के स्थान पर अहिंसा का मार्ग सुझाता है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में यह दृष्टि विश्वास और स्थिरता को बढ़ावा दे सकती है।

विकास का मानवीय दृष्टिकोण

आधुनिक विकास मॉडल प्रायः आर्थिक वृद्धि तक सीमित रहा है। इसके विपरीत यह दर्शन समावेशी और संतुलित विकास पर बल देता है, जहाँ समाज का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित हो। अमर्त्य सेन का मानव-केंद्रित विकास का विचार इसी भावना से मेल खाता है।

उन्नति और नैतिक नेतृत्व

सच्ची उन्नति केवल भौतिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक प्रगति से मापी जाती है। नेतृत्व में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और सेवा-भाव वसुधैव कुटुंबकम की मूल भावना है। ऐसा नेतृत्व वैश्विक समस्याओं के दीर्घकालिक समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

शिक्षा और संस्कृति में अनुप्रयोग

शिक्षा वह माध्यम है, जिसके द्वारा इस विचार को व्यवहार में उतारा जा सकता है। पाठ्यक्रम, सह-शैक्षिक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक आदान-प्रदान वैश्विक नागरिकता के विकास में सहायक हो सकते हैं।

समकालीन वैश्विक संदर्भ

भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंचों, विशेषतः G20, में वसुधैव कुटुंबकम को प्रमुख विषय बनाना इस बात का संकेत है कि यह दर्शन वैश्विक नीति-निर्माण में भी मार्गदर्शक बन रहा है।

निष्कर्ष (Conclusion)

वसुधैव कुटुंबकम एक कालातीत और सार्वभौमिक दर्शन है, जो मानवता, शांति, विकास और उन्नति के लिए समग्र दृष्टि प्रदान करता है। यह विचार व्यक्ति को वैश्विक परिवार का उत्तरदायी सदस्य बनने के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान हेतु इस दर्शन को शिक्षा, शासन, विकास योजनाओं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रभावी रूप से अपनाना आवश्यक है। जब विश्व एक परिवार की तरह सोचेगा और कार्य करेगा, तभी स्थायी शांति और न्यायपूर्ण विकास संभव होगा।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

References

Hindi / Indian Sources

महा उपनिषद — वसुधैव कुटुंबकम्।

राधाकृष्णन, एस. भारतीय दर्शन. राजकमल प्रकाशन।

शर्मा, चंद्रधर. भारतीय नैतिक चिंतन. मोतीलाल बनारसीदास।

English References

Radhakrishnan, S. (1951). Indian Philosophy (Vol. I & II). George Allen & Unwin.

Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.

Gandhi, M. K. (2001). The Essential Gandhi. Oxford University Press.

Nussbaum, M. C. (2011). Creating Capabilities. Harvard University Press.

UNESCO. (2015). Rethinking Education: Towards a Global Common Good.

Online References

United Nations. The 2030 Agenda for Sustainable Development. https://sdgs.un.org

Ministry of External Affairs, Government of India. Vasudhaiva Kutumbakam. https://www.mea.gov.in

World Economic Forum. Global Cooperation Initiatives. https://www.weforum.org

Encyclopaedia Britannica. Vasudhaiva Kutumbakam. https://www.britannica.com

Teacher's Welfare is Nation's Welfare
CTEF
Council for Teacher Education Foundation
ESTD. 1985